# दलित कविताओं में आहत मन की भावनाएं और विद्रोह के स्वर

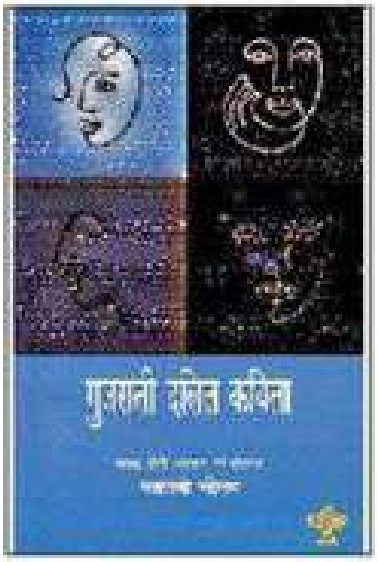


संकलन में 13 गुजराती दलित कवियों की सात-सात कविताएं (हिंदी में अनूदित) सम्मिलित की गई हैं। ये सभी कवि पुरुष हैं और उनकी कविताएं छंदमुक्त श्रेणी की हैं। इनमें 96 वर्ष के बबलदास चावड़ा से लेकर नई पीढ़ी के कवि भी हैं। मालिनी गौतम ने 1975 के आसपास से लिखी जा रहीं दलित कविताओं में से इन्हें चुनने का श्रमसाध्य कार्य किया है। मज़मून के अनुरूप इन रचनाओं में अपमान और शोषण के अनुभवों के साथ विद्रोह के स्वर और आशा की किरणें भी हैं। हर कवि का संक्षिप्त आत्मकथ्य भी है। विषय और चयन के लिहाज़ से यह एक महत्वपूर्ण कार्य है।

**साहित्य अकादेमी / गुजराती दलित कविता/**
**चयन, अनुवाद व सम्पादन- मालिनी गौतम / 170 रुपये**